ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 12
चैत्र शुक्ल पचंमी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
21 मार्च 2018 से 5 अप्रेल 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

समस्त देशवासियों को नव वर्ष चैत्र प्रतिपदा 2075 एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस (18 मार्च) की हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रदूषण निवारण के लिये 'यज्ञ' अनिवार्य है।

जड़ी–बूटियों का यजन अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इससे स्थानीय पर्यावरण औषधियुक्त बनता है और उसका अनायास लाभ वहां के निवासियों को सुगंधि, स्फूर्ति तथा शान्ति के रूप में मिलता रहता है। हवन से आरोग्यवर्धक ऋणावेशित कणों का निर्माण होता है। नवीन वैज्ञानिक तथ्य का उद्घाटन किया गया है कि यज्ञ से ऋणायणों का उत्पादन और संकेर्नेण निष्पन्न होता है। संसार में जीवन सबसे अधिक मूल्यवान है चाहे वह प्राणी का हो या प्रकृति का। जिन्दगी का सम्बन्ध आरोग्यता से है, जिसके नष्ट होने पर रोग बढ़ते हैं। रोग बढ़ने से मृत्यु का भय बना रहता है। निरोग्यता दो तरह की होती है पहली व्यक्ति की और दूसरी निसर्ग की। चूंकि प्राणियों का जीवन प्रकृति पर आधारित होता है। बाह्य जगत् में जो कुछ भी है वह सब व्यक्ति के भीतर है। पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड की एकता का प्रतिपादन शास्त्रकारों ने किया है। प्राचीन चिन्तन में कहा गया है कि ब्रह्माण्डगत अग्नि, वाणी बनकर पिण्ड के मुंह में स्थित है, वायु प्रदूषण निवारण के लिये 'यज्ञ' अनिवार्य है – डॉ. कमल–प्राण बनकर नासिका में, सूर्य चक्षु बनकर नेत्र में दिशाएं श्रोत्र बनकर कानों में, औषधि वनस्पति रोम रूप से त्वचा में, चन्द्रमा मन बनकर हृदय में तथा मृत्यु अपान बनकर नाभि में प्रविष्ट है। ब्रह्माण्ड का लघु मानचित्र है पिण्ड। जो कुछ ब्रह्माण्ड में है उसका अणु–अणु और तिल–तिल पिण्ड में है इसलिये प्राणि–जगत् के लिये प्रकृति की आरोग्यता आवश्यक है। सार्वजनिक आरोग्यता के साधन हैं– सफाई, सड़क, बिजली–पानी, अस्पताल आदि। ठीक उसी प्रकार 'यज्ञ' भी महत्त्वपूर्ण है। जीवन रक्षा का स्रोत होने के कारण यज्ञ का आरोग्य सम्बन्धी विषय अन्य साधनों से प्रथम और प्रधान है। पर्यावरणीय प्रदूषण के निवारण में हवन की अपनी विशिष्ट भूमिका है। यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं है अपितु वैज्ञानिकता से परिपूर्ण सार्वभौम कल्याण कारक कार्य है। हवन में वैज्ञानिक दृष्टि से पदार्थों के रासायनिक अभिक्रिया के अन्तर्गत दहन (Combustion), आसवन (Distillation), ऑक्सीकरण (उपचयन) (oxidation), जल विच्छेदन (Hydralysis), प्रकाश संश्लेषण (Phatosynthesis), वाष्पीकरण (Evaporation), संघनन (घनीभवन) (Condensation), धूनीकरण (Fumigation) आदि के द्वारा दृव्य पदार्थों का प्रभाव असंख्य गुना बढ़ कर पर्यावरण एवं व्यक्तित्व में निखार ला देता है। होत्रकर्म (हवन) में दो प्रक्रिया दिखाई पड़ती है।

यह अंक आर्य समाज रावतभाटा (चितौडगढ) के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है।
सम्पादक मण्डल आर्य समाज रावतभाटा (चितौडगढ) अजमेर के समस्त पदाधिकारियों का एतदर्थ धन्यवाद ज्ञापित करता है।

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

आर्य समाज नींदड़ जयपुर में 21 कुण्डिय नव संवत्सरेष्टि विश्व शांति पर्यावरण संरक्षण महायज्ञ

यज्ञ में आहुति देते हुए यजमान

यज्ञ में मंचस्थ ब्रम्ह्मा आचार्य डॉ. रामपाल विद्याभास्कर, स्वामी सोमानन्द सरस्वती, डॉ. कृष्णपाल एवं पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति

आर्य समाज सांभर जयपुर में 27 कुण्डिय नव संवत्सरेष्टि विश्व शांति पर्यावरण संरक्षण महायज्ञ

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में मनाया गया आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज तिलक नगर कोटा में मनाया गया नव संवत्सर

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

जाने नव संवत्सर (नव वर्ष) को

ओं तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्ध्दे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे अमुक संवत्सरे. .. अमुक...अयने..अमुक...ऋतो..अमुक...मासे.. अमुक.. पक्षे.. अमुक .. तिथे...अहम् .अमुक..कर्म करणाय भवन्तं वृणे।

हमारे विद्वान ऋषियों ने नित्यप्रति ''ओं तत् सत'' परमेश्वर के इन तीन नामों के साथ उपरोक्त उच्चारण करके कार्यों का प्रारंभ करने कि परम्परा डाली जिसका अर्थ हे– ब्राह्म दिन के दूसरे प्रहर (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका), वैवस्वत मनवन्तर (स्वायम्भव–1, स्वारोचिष–2, औतमि–3, तामस–4, रैवत–5 व चाक्षुष–6, यह छ मन्वन्तर बीत गये हें व सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है) के अठाईसवे कलियुग के प्रथम चरण का भोग चल रहा है। आदि सृष्टि से संकल्प संवत–1 अरब, 97 करोड़, 29 लाख, 49 हजार, 120 वर्ष, वर्तमान सृष्टि संवत–1 अरब, 96 करोड़, 08 लाख, 53 हजार, 120 वर्ष, वैवस्वत मनु से आर्य संवत–1 अरब, 20 करोड़, 53 लाख, 33 हजार, 120 वर्ष, कलियुग का 5120 वर्ष व विक्रमी संवत् 2075 का शुभारंभ चौत्र शुक्ल प्रतिपदा के प्रथम प्रहर तदनुसार 18–मार्च'2018, रविवार से हो रहा है।

इस प्रकार उपरोक्त मंत्र नित्य बोलकर सृष्टि की काल गणना का इतिहास कण्ठस्थ कर रखा है। जैसे बही खाते में मिती डालते है और तिथि, महीना, वर्ष बढ़ाते चले जाते है। इसी प्रकार आर्य लोग उपरोक्त वचन में तिथि, महीना, वर्ष बढ़ाते चले आ रहें है, जिससे सृष्टि की काल गणना का इतिहास आज तक सम्पुर्ण आर्यावृत में एक समान हैं।

ऋषियों ने काल के बारे में गहराई से चिन्तन किया और मोक्ष प्राप्ति के साधनभूत द्रव्यों में काल को भी द्रव्य रूप में सम्मिलित किया है। महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में कहा हैं। ''पृथ्वीव्यपस्तेजो वायुराकाश कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि।'' अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिग् , आत्मा व मन ये वो द्रव्य हें जिनका मोक्ष प्राप्ति हेतु तत्वज्ञान अनिवार्य है। काल शब्द 'कल' धातु से 'धन' प्रत्यय करने से बनता है, यास्क इसको गत्यर्थक 'कल' धातु से व्युत्पन्न मानते हैं। इस प्रकार काल का अस्तित्व गति में निहित है। वेदों में इसे आकाश, द्युलोक, पृथ्वी और अन्य सब पदार्थो एवं भूतों का जन्म दाता बताया है। यह सारे ब्रह्माण्ड को व्याप्त करता है इसमे ही मन प्राण और नाम समाहित है। सृष्टि का आदि और अंत काल ही है। हिरण्यगर्भ के विस्फोटित विश्व द्रव्य का प्रथम पदार्थ जब गतिमान होता है तो सर्वप्रथम काल की स्थापना होती है। ''समुन्द्रा दर्णावादधि संवत्सरो अजायत, अहोरात्राणि विदध विश्वस्य मिश्तोवाशी।'' (ऋ. 10.190.2) फिर काल के विभाजक त्रुटि, पल, मुहुर्त, दिन–रात, पक्ष, मास, संवत्सर आदि बनते जाते हैं।

जब काल चक्र एक संवत्सर का समय पूर्ण कर अपनी आयु में एक अंक की वृद्धि कर नवीन शुरुआत करता है उस दिन को संसार की सभी सभ्य जातियों में नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। आर्यावृत में चौत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि वर्ष भर की सभी तिथियों में सबसे अधिक महत्त्व रखती है क्योंकि इस दिन ईश्वर ने सृष्टि की रचना प्रारम्भ करी इसलिये इसे प्रवरा तिथि कहा था, जिसका अर्थ है सर्वोत्तम दिन, जो हमें सिखाता है कि हम अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में जो भी काम करें वह लोक कल्याण की दृष्टि से श्रेष्ठ स्थान पर रखे जाने योग्य हों।

सभी आर्यजनो से आग्रह है की अपने साप्ताहिक सत्संग रजिस्टर में तिथी को उपरोक्त संकल्प मंत्र के साथ अंकित करे जिससे हम अपने ऋषियों की परम्परा को जीवित रख सकें सभी को नव संवत्सर विक्रमी संवत् 2075 की शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, आर्य समाज रावतभाटा

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में आयोजित किया गया वैदिक नववर्ष

चैत्र कृष्ण अमावस्या संवत् २०७४ को नववर्षारम्भ की पूर्व पर संध्या महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। रातानाडा में महर्षि दयानन्द मार्ग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के पुराना परिसर के पास स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन की पवित्र यज्ञशाला में कविराज आचार्य वरुणदेवजी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ के बाद उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए चित्तौड़गढ़ से पधारे पंडित हरीश जी ने धर्म के तीन स्कन्धों में से एक यज्ञ के प्रथम मंत्र की व्याख्या की । व्याख्या के बीच में उन्होंने अन्न और अन्नदाता किसान की महिमा का वर्णन किया।

उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए कविराज आचार्य वरुणदेवजी ने पाखण्ड से सावधान करते हुए कहा कि जनसामान्य द्वारा तर्क, युक्ति और प्रमाण को हमेशा सामने रखा जाय, तो पाखण्ड चल ही नहीं सकता। आचार्य जी ने व्याकरण के आधार पर पितृ और पूजन शब्द की व्याख्या करता हुए बताया कि रक्षा करने वाले को पितर कहा जाता है और अपने पूज्यजनों की आज्ञा, इच्छादि का श्रवण करके उनकी पूर्ति करना उनका पूजन होता है, जो जीवित पितरों के मामले में ही संभव हो सकता है। आत्मा तो बिना शरीर के कुछ भी करने में समर्थ नहीं है। इसके अतिरिक्त कोई भी मनुष्य अपने स्वजनों का अहित नहीं करता। अतः मरने के बाद असमर्थ आत्मा के द्वारा काल्पनिक विनाश का भय दिखाकर लोगों का द्रव्य छीनना सज्जनों का कार्य नहीं है। आचार्य जी ने कहा कि मद्य–मांस का सेवन, गौहत्या आदि विशेष दिनों में ही नहीं बल्कि सर्वदा त्याज्य है। अतः सद्कर्मों को दिन विशेष से न जोड़कर सदा के लिए आवश्यक बताना चाहिए।

शान्तिपाठ और जयकारों से सम्पन्न कार्यक्रम के बाद ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

आर्य समाज रावतभाटा , जिला चित्तोड़गढ़, वाया–कोटा (राजस्थान) की वर्ष 2017–18 की गतिविधियाँ

1. 28–03–2017 को नव संवस्तर के उपलक्ष में चर्चा का आयोजन किया गया व सहभोज का आयोजन किया गया।
2. 08–07–2017 जरूरतमंद विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री (1100 कापियां व 115 पेन) का वितरण।
3. 08–07–2017 आर्य समाज रावतभाटा की बाहरी दीवार पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की चित्र दीर्धा का उद्घाटन किया गया व स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज के योगदान से अवगत कराया।
4. अगस्त 2017 से आर्य समाज रावतभाटा के सत्संग भवन के विस्तार का कार्य जारी।
5. 10–08–2017 पर्यावरण पर प्लास्टिक की थैलियों के दुष्प्रभाव को रोकने हेतु पर्यावरण बचाने के नारे के साथ निशुल्क 700 कपड़े की थैलियों का वितरण।
6. अक्टूबर'2017 में आर्य समाज रावतभाटा के उपप्रधान ओम प्रकाश आर्य द्वारा संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश में लघु नाटिकाओं के द्वारा वैदिक ज्ञान का प्रचार किया गया।
7. 10–12–2017 से 17–12–2017 तक आर्य समाज के तत्वावधान में पतंजलि योग समिति के साथ योग शिविर का आयोजन।
8. 23–12–2017 श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर शारदा साहित्य मंच के साथ काव्य गोष्ठी व श्रद्धानंद जी के जीवन पर चर्चा।
9. 07–01–2018 रावतभाटा से 55 कि.मी. दूर आदिवासी आँचल के सुसंस्कृत विद्यालय, मजरा छावनिया' में 97 आदिवासी स्कूली छात्र/छात्राओं को भामाशाहों के सहयोग से स्वेटर व पाठ्य सामग्री का वितरण।
10. 11–02–2018 से 22–02–2018 तक आर्य समाज रावतभाटा के तत्वावधान में त्रिमूर्ति प्राकृतिक उपचार, प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान सूरतगढ़ (राज.) के पवन कुमार भारद्वाज, एक्यूप्रेशर एवं सुजोक थेरेपिस्ट द्वारा, बिना दवाई का ईलाज एक्यूप्रेशर एवं सुजोक चिकित्सा पद्धति द्वारा किया गया।
11. श्रावणी पर्व से घरों में वैदिक सत्संगो का आयोजन किया गया।
12. आर्य समाज के तत्वावधान में देश के विभिन्न भागो के विद्यार्थियों में वैदिक ज्ञान के प्रचार हेतु वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया जिसमे हिंगोली (महा.), धार (म.प.) व धनबाद (झारखण्ड), कोटा व रावतभाटा के 2000 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

आर्य समाज रावतभाटा द्वारा प्रस्तुत वैदिक सामग्री के आधार पर जोधपुर में वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का केंद्र स्थापित हुआ है। आर्य समाज महर्षि पाणिनिनगर, जोधपुर के श्री मदन लाल जी तंवर द्वारा बृहद स्तर पर वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया जा रहा है।

मंत्री, आर्य समाज
रावतभाटा

पोर्ट ब्लेयर के आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में हुई षड् दिवसीय वेद कथा एवं प्रचार। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में दिए गये प्रोग्राम।

१४ से २१ फरवरी २०१८ तक पोर्ट ब्लेयर के जंगली घाट के राधा कृष्ण मंदिर में छह दिनों तक वेदो पर उपदेश प्रवचन का प्रोग्राम रखा गया। होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)के आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी चेन्नई तमिलनाडु के सेंट्रल आर्यसमाज में प्रचार करते हुए यहाँ आये। आप के साथ मेरठ (उत्तर प्रदेश) के पंडित अजय आर्य जी (भजनोपदेशक) भी आये थे जिससे सभी को आर्य समाज की उत्सव विधि को प्रथम बार देखने सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अंत के दिनों में पुरुषार्थी जी के आग्रह पर चेन्नई आर्यसमाज के प्रधान श्री धनञ्जय जोशी जी का भी सपत्नीक पोर्ट ब्लेयर आगमन हुआ। साथ में तमिल हिंदी व अंगेजी तीनो भाषाओ का साहित्य भी उनके भेंट स्वरुप साथ आया जो जनता में निशुल्क बांटा गया। यही आग्रह बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दीनदयाल जी को किया तो उन्होंने तुरंत ही बंगाली भाषा के प्रचारक आचार्य श्री योगेश शास्त्री जी को बंगाली साहित्य लेकर रवाना किया जिससे न केवल उनके उपदेशो का ही लाभ मिला अपितु बंगाली श्रोताओ को सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ भी मिल सकें। रंगाचांग ग्राम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं रविन्द्र बाँगला सीनियर सैकंडरी स्कूल इन दोनों में उपदेश भजन का कार्यक्रम भी रखा गया जिसका वहां के स्टाफ व छात्र छात्राओं ने लाभ उठाया। मंदिर में केवल शाम का सत्र ही ६.३० से ९ तक रखा गया था जिसमे संध्या यज्ञ के प्रशिक्षण के बाद भजन व उपदेश होते थे।

सुरेश आर्य
मंत्री
आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

सभा अधिकारियों का निरीक्षण कार्यक्रम

1. आर्यसमाज सोजत सिटी पाली

दिनांक 11–03–2018 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों के दल ने सोजत सिटी के आर्य समाज के अन्तर्गत आने वाली संस्थाओं का भ्रमण निरीक्षण किया।

दल में जोधपुर संभाग के उपप्रधान सेवाराम आर्य महर्षिदयानन्द स्मृति भवन न्यास मन्त्री श्री किशनलाल आर्य अन्तरंग सदस्य देवेन्द्र शास्त्री बाल आयोग राजस्थान के उपनिदेशक श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य, वरिष्ठ आर्य श्री विक्रम सिंह साखला एवं गोपाल आर्य शामिल थे।

सोजत में आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आने वाली आर्य समाज की तीन संस्थाएँ है, रामेलाव तालाब जहाँ गढ की प्राचीर से सटा ऐतिहासिक भवन है जो लगभग 100 साल पुराना है। जिसमें गति विधियाँ लगभग बन्द सी पडी थी कभी कभार एक दो आर्य जन वहाँ जाकर पेड पौधौं में पानी लगा देते हैं। यहाँ दो कमरे है बरामदा एवं दोनों तरफ समानान्तर पक्का चबूतरा एवं लघु उद्यान है एक हवन कुण्ड बडे चबूतरे पर खुले में बना है एवं एक भवन के अन्दर फर्स में बना है। यहाँ पर बैठकर अधिकारियों ने स्थानीय आर्य जनों के साथ बैठक की एवं गतिविधियों के सफल संचालन हेतु नवीन कार्यकारिणी का गठन किया।

2 आर्य समाज बगीची कचहरी रोड सोजत

यहाँ बहुत बडी जगह है लगभग 8 से 10 कमरे बने हुए है वर्तमान में गीता देवी भटनागर यहाँ संरक्षक है, आर्य समाज की गतिविधियाँ लगभग शून्य है सभा अधिकारियों एवं स्थानीय नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने गीता देवी के साथ बैठक कर स्थानीय भवन एवं जमीन का निरीक्षण किया भवन के सामने मुख्य मार्ग की ओर देखते हुए एक दुकान का निर्माण किया जा रहा है, जो एक अधिवक्ता द्वारा संचालित की जा रही है। सभी अधिकारियों ने एक स्वर में यहाँ आर्य समाज की गतिविधियॉ संचालित करने पर सहमति व्यक्त की यहाँ नवनिर्वाचित प्रधान श्रीमती लीलावती संरक्षक गीता देवी एवं समस्त कार्य कारिणी सदस्य मिलकर साप्ताहिक सत्संग हवन आदि की गतिविधियॉ संचालित करेंगे। संरक्षक गीता देवी ने इसके लिए प्रसन्नता पूर्वक सहमति प्रकट की एवं सभा के नियम एवं निर्देश मानने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की उन्होने पूरी जगह को ऋषि वाटिका के रुप में विकसित करने के लिए भी संकल्प लिया।

3 आर्य समाज सोजत रोड

यह आर्य समाज सभा की 1999 की प्रामाणिक पंजीकरण सूची में नामांकित है किशन जी गहलोत, सेवाराम जी, विक्रम जी सॉखला आदि के साथ सभी पदाधिकारी सोजत रोड पहुॅचे जहॉ आर्य समाज के कोई व्यक्ति सक्रिय न होने तथा कुछ के जोधपुर चले जाने के कारण यह भवन संभवतः गणेश मन्दिर का रूप ले चुका है इस विषय में विस्तृत फिर कभी लिखेंगे।

सोजत सिटी में अवस्थित दोनों जगह पर यज्ञ आदि संचालित करने हेतु सभा अधिकारियों ने नवनिर्वाचित प्रधान श्रीमती लीलावती जी एवं सदस्यो को एक अधिकार पत्र प्रदान किया । तीसरी जगह सोजत रोड की भूमि भवन के रिकॉर्ड के आधार यह टीम संभावानाए तलासेगी ।

सेवाराम आर्य , उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि, सभा राजस्थान

सोजत में नवसंवत्सर पर विशाल यज्ञ का आयोजन

सोजत ।

भारतीय नवसंवत्सर अभिनन्दन के अवसर पर स्थानीय मोदी मोहल्ले में स्वतन्त्रता सेनानी रुचिर परिवार द्वारा विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यज्ञमान की भूमिका समाजसेवी पार्षद मंजु–कैलाश अखावत ने निभायी ।

आर्य समाज की प्रधान श्रीमती लीलावती आर्या के पौरोहित्य में समाजसेवी राजेन्द्र अग्रवाल, ओमप्रकाश राठी, पार्षद किरण सोलंकी, आर्यसमाज के संरक्षक दलवीर राय व मन्त्री हीरालाल आर्य, संगीतकार रवीन्द्रकुमार भटनागर, अरविन्द राय, समाजसेवी जवरीलाल बोराणा, युवा उद्यमी कन्हैयालाल गुप्ता, सुरेन्द्र भटनागर, कवि नवनीत राय 'रुचिर', श्रीमती अयोध्या अग्रवाल, स्नेहलता लढ्ढ़ा 'संजु', प्रेमलता तोषनीवाल, अनीता पलोड़, उषा सैन सहित नगर के गणमान्य नागरिकों ने यज्ञ में अपनी आहूतियाँ दीं ।

इस अवसर पर भजन कीर्तन आदि भी हुए ।कार्यक्रम में मुख्य यज्ञमान अखावत दम्पति का आयोजक रुचिर परिवार द्वारा बहुमान किया गया । सभी का आभार समारोह संयोजिका योग शिक्षिका श्रीमती वीणा भटनागर ने ज्ञापित किया ।

प्रेषक –(नवनीत राय 'रुचिर')
9413083973
सोजत शहर (राज.)

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

सनातन धर्म प्रहरी आर्य समाज वर्ष प्रतिपदा नवसम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

वर्ष प्रतिपदा चैत्र शुक्ल 1 सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना मुम्बई शहर में देश के 85 प्रबुद्ध गणमान्य नागरिकों के आग्रह पर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई। इस हेतु प्रथम प्रस्ताव कोलकता में ठाकुर देवेन्द्रनाथ, ईश्वरचन्द सैन जैसी विभूतियों ने भी दिया था।

किसी भी संस्था की पहचान उसके उद्देश्य, उसके संस्थापक और कार्यकर्ता तथा किये गये कार्यों से होती है। समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति, संगठन, संस्थायें हो चुकी हैं जिसके द्वारा समाज व राष्ट्र को बहुत कुछ दिया गया, किन्तु उसके उस त्याग तपस्या व बलिदान की जानकारी आज भी ठीक–ठीक रूप से समाज को नहीं है।

ऐसी ही श्रृंखला में आर्य समाज उनमें से एक है, आर्य समाज का कार्य क्षेत्र व उद्देश्य संकुचित विचारों या सीमा से उठकर है।

बहुत कुछ मानव समाज को आर्य समाज ने दिया है। इसकी जानकारी होने पर हर कोई स्वतः मानने लगेगा कि इस जैसा कोई दूसरा संगठन नहीं है। यहॉ संक्षेप में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं –

आर्य समाज ईश्वर विश्वासी संगठन है – आर्य समाज की यह मुख्य व दृढ़ मान्यता है कि इस समस्त सृष्टि का, जड़ चेतन का आधार, परमात्मा है। उसकी कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। हर पल उसकी दया समस्त प्राणियों पर बरस रही है। इसलिए उस सब जगत के स्वामी परमात्मा जिसका मुख्य नाम ओ3म् है उसकी ही स्तुति प्रार्थना उपासना (भक्ति) करने को आर्य समाज श्रेष्ठ मानता है। आर्य समाज के पहले नियम में ही इसका उल्लेख इस प्रकार किया है। ''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।''

सनानत धर्म का अनुयायी – धर्म वही है जो पूर्ण हो सबके लिए है और सदा से था सदा है और सदा रहेगा। ऐसी धार्मिक विचारधारा का कोई स्रोत तो होगा ही जिसने यह हमें दिया। धर्म प्रारंभ से था इसका कोई न प्रारंभ है न अन्त है तो ऐसी प्रेरणा देने वाला भी वही हो सकता है जिसका न आदि है और न अन्त है। वह कोई मनुष्य तो हो नहीं सकता, सदा रहने वाली शक्ति तो एकमात्र ईश्वर ही है। परमात्मा सदा रहता है इसलिए उसे सनातन सत्ता माना जाता है। इसलिए उसके ज्ञान को सनातन ज्ञान और उसे ही सनातन धर्म माना गया है। वह ज्ञान वेदों के माध्यम से प्राप्त हुआ हमारे पूर्वज (महाभारत काल के पूर्व तक) वेद को ही परम धर्म मानते थे इसलिए कहा गया – ''वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'' अर्थात् – वेद ही धर्म का मूल है। हमारे पूर्वज पितरों के ज्ञान चक्षु भी यही वेद रहे है, कहा गया – ''सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्'' पितरों के ज्ञान चक्षु वेद है।

सन्त तुलसीदास जी भी धर्म का आधार वेद को बताते हुए कहते हैं –

जेहि विधि चलहि वेद प्रतिकूला।
तेहि विधि होई धर्म निर्मूला।।

सनातन ज्ञान के आधार ईश्वरीय वाणी वेद है, वही धर्म का आधार है। इसी सत्य सनातन वैदिक धर्म को आर्य समाज मानता है। आर्य समाज का मानना है कि संसार के समस्त प्राणियों का धर्म एक ही हो सकता है हॉ सम्प्रदाय व मत–मतान्तर भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

मत–मतान्तर, सम्प्रदाय, मजहबों के ज्ञान का आधार मानवीय ज्ञान है जबकि धर्म का आधार परमात्मा है।

धर्म के कारण मानव समाज कभी नहीं लड़ा वह मजहबों के कारण सदा से लड़ रहा है और लड़ते रहेगा।

जातिवाद के कारण मानव, मानव में कोई भेद नहीं मानता – जन्म के अनुसार किसी जाति का समर्थन आर्य समाज नहीं करता। मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार उसकी योग्यता के अनुसार उसको मान्यता देता है। यही व्यवस्था हमारे सनातन धर्म में सनातन संस्कृति में दर्शायी है, जिसे वर्ण व्यवस्था कहते हैं। आर्य समाज किसी को अछूत, दलित, ऊँच नींच नहीं मानता, आर्य समाज में हजारों वे व्यक्ति जिनका जन्म पिछड़े (समाज की तथाकथित मान्यता के अनुसार हरिजन या शूद्र) परिवार में हुआ आर्य समाज के सम्पर्क में आकर वे उच्च पदों पर आज बैठे हैं, धर्म पण्डित बने हैं आचार्य शास्त्री, पुरोहित का सम्मान पा रहे है।

पास के ही देश मॉरिशस में आर्य समाज की एक बड़ी सभा रविदास के नाम पर (रैदास जिन्हें मौची समाज का कहा जाता है) आर्य सभा है, जिसमें महिला व पुरूष वहॉ के पुरोहित पण्डित हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं। हमारे संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव आम्बेडकर को समाज जब अछूत–अछूत कहकर उपेक्षित करता था, उस समय आर्य समाजी विद्वान ने उन्हें कुछ समय अपने पास रखा और बड़ोदरा महाराज से उनकी पढ़ाई हेतु सहयोग का प्रस्ताव रखा।

प्रकाश आर्य , महू (म.प्र.)

नवसंवत्सर पर यज्ञ द्वारा जीव मात्र की कामना

मगरा पूँजला स्थित आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनिनगर व नृसिंह जी की प्याऊ मार्केट एसोसियेशन के सयुक्त तत्वावधान में आयोजित वैदिक भारतीय नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि नववर्ष पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा शिवराम शास्त्री व गजेसिंह द्वारा नवसंवत्सर पर जीव मात्र ,समाज,परिवार, राष्ट्र में सुखदायक,मंगलकारी व समृद्धिदायक की भावना से यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की गई।

- **जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता; ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। – एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश**

समाजसेवी लीलावती आर्या बनीं आर्य समाज की प्रधान

आर्य समाज, सोजत की अन्तरंग कार्यकारिणी के चुनाव में प्रधान पद पर समाजसेवी श्रीमती लीलावती आर्या को निर्विरोध चुना गया वहीं संरक्षक पद पर दलवीर राय व श्रीमती गीतादेवी भटनागर को मनोनीत किया गया ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान सेवाराम आर्य, अन्तरंग सदस्य देवेन्द्र शास्त्री, बाल आयोग राजस्थान सरकार के उपनिदेशक ब्रह्मप्रकाश आर्य (जयपुर), स्वामी दयानन्द स्मृति भवन न्यास के मन्त्री आर्य किशनलाल गहलोत व प्रदेश प्रतिनिधि विक्रमसिंह साँखला (जोधपुर) की देखरेख में सम्पन्न आर्य समाज, सोजत के चुनाव में मन्त्री हीरालाल आर्य व कोषाध्यक्ष नवनीत राय 'रुचिर' को मनोनीत किया गया।

(नवनीत राय 'रुचिर')
सोजत शहर

आर्य समाज रावतभाटा द्वारा संचालित गतिविधियाँ

आर्य समाज साभंर में नव सम्वत्सर पर मंचस्थ स्वामी सोमानन्द सरस्वती प. रविदत्त, डॉ. सुधीर शर्मा, दीपक शास्त्री, यादराम आर्य

आर्य समाज बाडमेर के आर्यजन नव सम्वत्सर पर यज्ञ करते हुए

- परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।

— सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित कर पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. 25 मार्च 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (अन्तरंग) की बैठक आर्य समाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली
2. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक **A/c No.:18830100010430** तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

टैक्नोलॉजी/आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस की विनाशकारी घुड़दौड़

आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस पर मेरे एक वक्तव्य पर एक पाठक की प्रतिक्रिया तथा ऐसे ही अन्य अनेकों प्रगतिशील युवाओं के सम्भावित प्रश्नों के उतर में मैं यह कहना चाहूँगा कि वे आज संसार में टैक्नोलॉजी की दौड़ में अपने देश के पीछे रह जाने के

भय से भयभीत होकर निरन्तर भागने में ही अपना गौरव मान रहे हैं, वे याद रखें कि अधिक वेग वाले दुर्घटनाग्रस्त भी ऐसे होते हैं कि उनके अंगों की पहचान भी नहीं होती। संसार जहां जा रहा है, वह भयानक मार्ग है। टैक्नोलॉजी उतनी ही उपयोगी है, जिससे मानव शरीर, मन, और आत्मा का पतन न हो पावे। अनेक शारीरिक व मानसिक रोग तथा पर्यावरण विनाश इस कथित वैज्ञानिक जीवन शैली की ही देन हैं। यह संसार उस भविष्य की ओर जा रहा है, जहां भोग के अनेक सुख साधन तो होंगे परंतु भोगने वाला मनुष्य विषाक्त हवा, जल व भूमि के प्रभाव से नाना रोगों से ग्रस्त होता हुआ, अपने किए पर रो रहा होगा। जहां सब कुछ विनाश भरा होगा, संसार अशांत, शोकाकुल एवं हिंसा आदि जघन्य पापों से भरा होगा। उस समय सर अल्बर्ट आइंस्टीन की वह भविष्यवाणी सत्य होगी, जिसमें कहा था कि चौथा विश्व युद्ध ईंट, पत्थर व तलवारों से होगा अर्थात् संपूर्ण टैक्नोलॉजी का विनाश हो जाएगा। आज जो कथित प्रगतिशील बैलगाड़ी का उपहास करता है, वह अभी नहीं समझेगा कि गाय व बैल का महत्व क्या है? जब उसकी समझ में आएगा, तब तक शायद गाय व बैलगाड़ी इस धरती पर बचेगी ही नहीं।

मेरे मित्रो! मैं एक वैदिक भौतिक शास्त्री होने के नाते आपको सुझाव दे रहा हूँ कि जब भौतिक विज्ञान अपनी ऊँचाइयों को पार कर लेगा, तब उसे यथार्थ आध्यात्मिक विज्ञान का सुखद अनुभव होगा। फिर यह मानव जहां उत्तम किस्म के विमानों का आविष्कार करेगा, वहीं बैल, घोड़ा, हाथी, पालकी व पैदल यात्रा का भी उपयोग करेगा। तब घातक अस्त्र–शस्त्र भी होंगे, परंतु उन्हें वापस लौटाने व नष्ट करने के एंटी अस्त्र–शस्त्र भी होंगे। तब निरापद अति आवश्यक व न्यूनतम टैक्नोलॉजी होगी, वहां यज्ञादि से सुरभित व स्वस्थ पर्यावरण भी होगा। तब जहां धर्मरक्षा हेतु ही युद्ध होंगे, वहीं परस्पर महान् प्रेम व करुणा का वातावरण भी होगा। तब जहां सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को जानने हेतु लोक–लोकांतर की यात्रा करेंगे, वहीं सृष्टि के स्रष्टा परमात्मा के ध्यान व समाधि अवस्था में परमानंद का भी उपभोग करेंगे। हम दौड़ेंगे परंतु जोश के साथ होश भी रखेंगे तथा दौड़ में अंधापन नहीं होगा, नकल नहीं होगी, बल्कि विवेकसम्मत लक्ष्य सदैव सम्मुख रहेगा। मैं ऐसे ही सत्यधर्म एवं कल्याणकारी विज्ञान का पक्षधर हूँ। मैं इस संसार को सुख–शांति व आनंद का वह मार्ग बता रहा हूँ, जो वेदों, देवों व ऋषियों ने बतलाया था और जिसे संसार सर्वथा भूल गया था। हजारों वर्ष पश्चात् महर्षि दयानंद सरस्वती ने पुनः उस मार्ग का संकेत किया था। जागो! मेरे प्रबुद्ध व जागरूक मानव! जागो! इस धरती को विनाश से बचा लो। आज तो स्टीफन हॉकिंग भी ऐसा आह्वान कर रहे हैं। वे सम्पूर्ण जीवन टैक्नोलॉजी का उपयोग करते–2 टैक्नोलॉजी को सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए खतरा मान रहे हैं। वे आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस को मानवता के लिए भारी संकट मान रहे हैं।

–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक